जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक

ककसाड़

वर्ष 11 अंक 107
फरवरी, 2025
मूल्य : 25/- रुपए

ककसाड़
राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

ISSN 2456-2211

दिल्ली से प्रकाशित

दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा पुरस्कृत

ककसाड़

(जनजातीय चेतना, कला, साहित्य, संस्कृति एवं समाचार का राष्ट्रीय मासिक)

फरवरी 2025 **वर्ष-11 • अंक-107**

संस्थापना वर्ष 2015

प्रबंध एवं परामर्श संपादक
कुसुमलता सिंह

संपादक
डॉ. राजाराम त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार
फैसल रिजवी, अपूर्वा त्रिपाठी

•

ग्राफिक डिजाईन
रोहित आनंद

• मुख्य कार्यालय एवं रचनाएँ भेजने का पता •

सी-54 रिट्रीट अपार्टमेंट, 20-आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली-110092

फोनः 9968288050, 011-22728461

•

• संपादकीय कार्यालय •

151, डी.एन.के. हर्बल इस्टेट, कोण्डागाँव, छ.ग.-494226

फोनः 9425258105, 07786-242506

ई-मेल : kaksaadeditor@gmail.com
kaksaadoffice@gmail.com

वेबसाइट : www.kaksad.com

मूल्य : **रु. 25** (एक प्रति), वार्षिक : **रु. 350/-** संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक : **रु. 500/-** वार्षिक (विदेश) : **$110** यू.एस. आजीवन व्यक्तिगत : **रु. 3000/-** संस्था : **रु. 5000/-**

संपादन-संचालन पूर्णतः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

दिल्ली से प्रकाशित होने वाली 'ककसाड़' पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

• ककसाड़ से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे • **कुसुमलता सिंह** स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक।

अनुक्रम

4. **संपादकीय**

साक्षात्कार

5. अपनी परंपरा के मूल्य पर विकास की दौड़ में शामिल नहीं होते आदिवासी (अहीर नृत्यकला परिषद् के अध्यक्ष और "रऊता. ही कला" के संपादक **डॉ. मंतराम यादव** से साहित्यकार **अश्विनी कुमार आलोक** की बातचीत)

लेख

10. मणिपुर की कबुई जनजाति : **वीरेन्द्र परमार**
14. जारवा आदिवासियों को मिले मताधिकार : **प्रमोद भार्गव**
16. श्रीमद् वाल्मीकि रामायण में वाद्य यंत्र : **डॉ. अनुपमा श्रीवास्तव**
20. छत्तीसगढ़ जनजातीय संस्कृति में आजादी के गीत : **डॉ. सुशील त्रिवेदी**

कहानी

23. हत्यारे : **सुशांत सुप्रिय**
26. पदचिह्न : **रमेश शर्मा**
30. तयशुदा मौत और मुहब्बत : **गेब्रियल गार्सिया मार्खेज**

कविताएँ

35. डॉ. अशोक गुजराती 35. दयाराम वर्मा 36. शिवानी
36. प्रतीक झा 'ओप्पी' 37. डॉ. स्वदेश भटनागर
38. ममता सिंह शुक्ला

श्रद्धांजलि

40. श्याम बेनेगल की फिल्में मनुष्यता को अपने मूल स्वरूप में तलाशती हैं : **डॉ. शलैन्द्र चौहान**

लघुकथा

41. सुपुत्र : **ब्रजमोहन जावलिया**
44. खीर वाली बसंत पँचमी : **संजय मृदुल अग्रवाल**
48. पुरस्कार : **करमजीत कौर**

व्यंग्य

42. सर्दी, साहित्य और पुस्तक मेला का सुरू : **विनोद कुमार विक्की**

पुस्तक चर्चा/पुस्तक समीक्षा

45. कैक्टस एवं अन्य लघुकथाएं : **दिपाली ठाकुर**
46. छंदोपासना : **कुसुमलता सिंह**
47. कलम बिक नहीं सकती : **कुसुमलता सिंह**
29. **कहावतें**
9. **क्या है ककसाड़?**
19. **यादें**
48. **पत्र**
49. **साहित्यिक समाचार**

आवरण गोंड कलाकृति - मिथलेश श्याम
मो. 84620-35285

संपादकीय

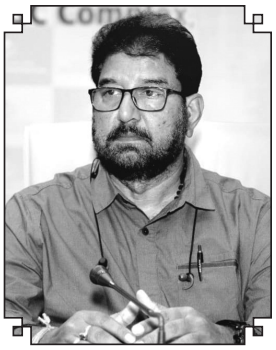

फरवरी का महीना, न सर्दियों की ठिठुरन और न ही वसंत का पूर्ण उद्घोष, मानो प्रकृति किसी नवीन आवरण में सजने की प्रतीक्षा कर रही हो। यह वह समय है जब धरती पर नए जीवन के अंकुर फूटने लगते हैं, पतझड़ से ठूंठ पेड़ों पर नई बहुरंगी कोपलें हौले-हौले अपना सर निकाल कर बाहर की दुनिया की ओर झाँकने लगती हैं।

"प्रकृति का यह परिवर्तन सिर्फ दृश्य भर नहीं है, यह उस निरंतरता का प्रतीक है जो जीवन को आगे बढ़ाने का आधार है। हर कोपल, हर नई कली जैसे हमें बताती है कि सृजन का चक्र कभी थमता नहीं। यह वह समय है जब ठूंठ पत्तों की जगह नई हरी चादर ओढ़ने लगते हैं और धरती अपने सौंदर्य का नूतन अध्याय लिखती है।"

समूचा वातावरण एक कवि की कल्पना जैसा प्रतीत होता है। जैसा कि हिंदी के महाकवि जयशंकर प्रसाद ने कहा हैः

"अरुण यह मधुमय देश हमारा, जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।"

यह मधुमय समय, भारत के हृदय प्रयागराज में, महाकुंभ के अनुपम आयोजन को भी उजागर करता है, जो न केवल धार्मिक आस्था का संगम है, बल्कि विज्ञान और संस्कृति का भी प्रतीक है। महाकुंभ का वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमें पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण, खगोलशास्त्र, और जल शुद्धिकरण के परंपरागत उपायों की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

यह पर्व महज धार्मिक आस्था का संगम नहीं है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना को जगाने का अमृतमयी स्रोत है। हर डुबकी, हर मंत्रोच्चार मानो हमारी सामूहिक स्मृतियों को ताजा कर देता है। महाकुंभ हमें यह एहसास कराता है कि धर्म और विज्ञान, आस्था और तर्क साथ चल सकते हैं, बशर्ते हम अपने मूल्यों और प्रकृति से जुड़े रहें।

दरअसल यह हमारी सामूहिक चेतना को जगाने का माध्यम है। ऐसा कहा जाता है कि "प्रकृति और मानव का रिश्ता तब तक जीवित रहता है, जब तक उनकी आत्मा एक-दूसरे की परवाह करती है।" थॉमस मोर के शब्दों में, "The earth has music for those who listen." कुंभ में यही धरा का संगीत सुनाई देता है, जिसमें हमारी जड़ें खोजी जा सकती हैं।

जनजातीय समुदायों के उत्सव और सामाजिक आयोजन इसी सामूहिक चेतना के अंग हैं। ये उत्सव, चाहे वह आदिवासियों का सरहुल हो, कर्मा पर्व हो या फिर ककसाड़ पर्व हो, ये पर्व केवल अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि मानवता और प्रकृति के बीच के गहरे संबंधों का प्रतीक हैं। इन उत्सवों में छिपा संदेश है कि प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित किए बिना, समाज की स्थिरता व संतुलित विकास असंभव है।

आज, जब पश्चिमी राजनीतिक और सांस्कृतिक उपकरण हमारी परंपराओं को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास कर रहे हैं, यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपनी जड़ों को मजबूती से थामे रहें। पश्चिम की उपभोक्तावादी संस्कृति ने मनुष्य को प्रकृति से अलग कर दिया है, जबकि हमारी जनजातीय परंपराएं सिखाती हैं कि जल, जंगल और जमीन के साथ सामंजस्य ही सच्ची समृद्धि है।

जल हमारी सभ्यता का जीवनदायिनी स्त्रोत रहा है। हमारी संस्कृति में जल को सिर्फ संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का प्रतीक माना गया है। नदी के हर बहाव में, हर झरने की धारा में जीवन का गीत छुपा है। यह गीत न केवल सुनने का, बल्कि समझने का आह्वान करता है कि जल ही हमारी सभ्यता की जड़ें सींचता है। सारी प्राचीन सभ्यताएं नदियों के तटों पर ही विकसित हुई हैं।

हमारे प्राचीन वन, नदियां और जलाशय जीवन के अभिन्न अंग रहे हैं। जल न केवल शारीरिक जीवन के लिए